REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में मलिक नायब काफूर का द्वारसमुद्र एवं माबर अभियान : एक संक्षिप्त ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज आफ ऐजूकेशन ,
गुरूहरसहाय, फिरोजपुर (पंजाब)।

प्रस्तावना :

अलाउद्दीन खिलजी की साम्राज्यवादी श्रेष्ठता और राजतन्त्र की पराकाष्ठा अर्जित करने का एक मात्र आधार मलिक काफूर था जिसकी अभूतपूर्व क्षमता ने खिलजी साम्राज्यवाद के प्रसार को सुदूर दक्षिण तक पहुचा दिया। मलिक काफूर का देवगिरी का प्रथम अभियान 1308 ई0 में समाप्त हुआ। मार्च 1310 ई0 में वारंगल अभियान समाप्त हुआ। अलाउद्दीन भारत के सदूरतम कोनो में अपनी पताका फहराना चाहता था इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुयेदक्षिण से वापिस आने के केवल 5 माह पश्चात् 20 नव0 1310 (24 जमा दि उल आखीर, 710 हि0) को मलिक इज्जुद्दोला नायब काफूर पुनः एक विशाल सेना के साथ द्वारसमुद्र एवं माबर की ओर रवाना हुआ।[1] माबर का समुद्र देहली से इतनी दूर था कि वहॉ तक सेना एक साल की यात्रा के उपरान्त पहुॅच सकती थी,[2] सेना जमुना नदी के किनारे–किनारे दक्षिण की ओर बढ़ी और उस नदी के तट पर स्थित टंकल या नटगल में ठहरी[3] दीवाने अर्ज ममालिक के कर्मचारियों ने सेना का सग्रहीकरण किया। सेना यहॉ 15 दिन ठहरी।[4] सेना पुनः दक्षिण की ओर बढ़ी। सैनिकों ने दुर्गम मार्ग पार किये और वे कैथून नामक एक स्थान पर पहुॅचे।[5,6]

तदन्तर उन्होंने नर्वदा और उससे छोटी अन्य दो नदियॉ पार की, इस यात्रा के अन्त में शाही सेनानायक ने प्रताप रूद्रदेव के दूतों से भेंट की।[7] राय द्वारा खराज में भेजे गये 23 हाथी सेना से आकर मिले।[8] सेना गुरनाम (खरगोश) में ठहरी, वहॉ सैनिकों का जमाव हुआ और तेलगांना राजा द्वारा भेंट में दिये गये हाथी दिल्ली भेज दिये गये।[9] तावी नदी (ताप्ती) पार करने के उपरान्त 3 फरवरी 1311 (13 रमजान) को शाही सेना देवगिरी पहुॅच गयी।[10] सेना का स्वागत करने के लिये रामदेव ने हर संभव व्यवस्था की थी।[11] यहॉ मलिक काफूर, बीसलदेव तथा अन्य देवों को उखाड़ फैंकने के लिये भाले, तीर और युद्ध के अन्य शस्त्र प्राप्त करने हेतु कुछ दिनों के लिये ठहरा।[12] बरनी त्रुटिपूर्वक कहता है कि मलिक नायब जब देवगिरी पहुॅचा रामदेव का देहांत हो चुका था।[13] फरिश्ता भी बरनी का अनुगमन करता है, किन्तु अमीर खुसरो और इसामी इस तथ्य की ओर इंगित करते हैं कि जब काफूर द्वार–समुद्र जाते समय देवगिरी से होकर गुजरा उस समय रामदेव जीवित था। यादव राजा द्वारा शाही सेनानायक को दी गयी सहायता का खुसरो विस्तार से वर्णन करता है। इसामी भी कहता है कि रामचन्द्र को अलाउद्दीन ने अलप खॉ की पुत्री के साथ राजकुमार खिज्र खॉ के विवाह में दिल्ली आमंत्रित किया था और रामचन्द्र उसमें उपस्थित हुआ था।[14]

यह विवाह माह फरवरी 1312 में सम्पन्न हुआ था, इसलिये यह स्पष्ट है कि रामदेव का देहान्त इस तिथि के बाद ही हुआ। इसके अतिरिक्त एक अन्य स्थान पर फरिश्ता स्वंय कहता है कि मलिक नायब 1312 में पुनः दक्षिण भेजा गया था, क्योंकि सिंहनदेव अपने पिता के जीवनकाल में ही स्वतंत्र हो गया था। अतः यह स्पष्ट है कि रामदेव द्वारसमुद्र के अभियान के समय जीवित था।[15] राय राया रामदेव ने यह आदेश दिया कि सेना की आवश्यकता की समस्त वस्तुऍ बाजार में पहुॅचा दी जाये। सभी लोगों ने उचित मूल्य पर अपनी आवश्यकता की समस्त वस्तुयें क्रय कर लीं।[16] अमीर खुसरो कहता है कि व्यापारियों ने मुस्लिम सैनिकों से

झगड़ा नहीं किया और न सैनिकों ने ही कोई फसाद उत्पन्न किया और बाजार में लेन–देन शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुये।[17] रामदेव ने अपने सीमांत सेनाध्यक्ष परशुराम दलवाई को यह आदेशदिये कि वह शाही सेना की सहायता[18] मलिक काफूर ने देवगिरी के अमनाबाद (शान्तिगृह) से उपारसदेव के खराबाबाद (उजड देश) को प्रस्थान किया। पॉच पड़ावों के पश्चात् सीनी, गोदावरी और भीमा नदियॉ पार करने के उपरान्त वे होयसल राज्य की सीमा पर पहुॅचे।[19] जब काफूर होयसलों की राजधानी की ओर बढ़ रहा था, राजा वीर बल्लाल तृतीय अपनी सेना के साथ सुदूर दक्षिण को गया हुआ था।

पाण्डय राजा भारवर्मन कुलशेखर के दो पुत्र थे सुंदर पाण्ड्य और वीर पाण्ड्य। राजा भारवर्मन कुलशेखर ने वीर पाण्ड्या का पक्ष लिया, उसे अपना उत्तराधिकारी नामजदकर किया। सुंदर पाण्ड्या यह खुला पक्षपात सहन न कर सका। क्रोधावेग में उसने अपने पिता की हत्या कर डाली और मरड़ी (मदुरा) में सुंदर पाण्ड्य ने राजमुकट धारण कर लिया।[20]इस घृणित कार्य के कारण दोनों भाइयों में कटु संघर्ष प्रारम्भ हो गया, अपने चचेरे भाई की सहायता से वीर पाण्ड्य ने सुदंर पाण्ड्या को पराजित कर दिया। सुदंर पाण्ड्या उत्तर की ओर भाग खड़ा हुआ और दिल्ली में अलाउद्दीन से या उसके सेनापति काफूर से जो उस समय दक्षिण में था सहायता मॉगी।[21]इसी बीच द्वार समुद्र के राय वीर बल्लाल तृतीय ने पाण्ड्य नगरों को खाली पाकर उन पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया, किन्तु इस्लामी सेना के पहुॅचने की सूचना पाकर वीर बल्लाल देव तृतीय अपने राज्य में वापिस शीघ्रता से आ गया।[22]मलिक काफूर को होयसलों और पाण्ड्यों रियासतों में होने वाली घटनाओं के बारे में बन्द्री में सभी कुछ ज्ञात हो गया था।[23]

वरिष्ठ मलिकों ने यह निश्चय किया कि यह आवश्यक है कि इसके पूर्व की वे अपनी सुरक्षा की व्यवस्था करे, वीर बल्लाल पर आक्रमण करना आवश्यक है। अस्तु 10 हजार चुने हुये सैनिकों ने काफूर के नेतृत्व में द्वारसमुद्र की ओर कूच किया।[24]

बारह दिन तक लगातार सैनिक उबड़–खाबड़ मार्ग पर चलते रह, तत्पश्चात् समस्त कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करते हुये बृहस्पतिवार 25 फरवरी 1311 को शाही सेना ने द्वार समुद्र के किले को घेर लिया।[25] दूसरे दिन प्रातः काल काफूर दुर्ग के चारों ओर घूमा और प्रमुख मलिकों सहित मुख्य द्वार के सामने मोर्चे पर डट गया।[26]

किले के निवासियों के हाथ–पैर शाही सेना के भय से थर–थर कॉपने लगे, राय शाही सेना का मुकाबला करने के लिये परामर्श करने लगा।[27] राय ने गेसूमल नामक एक अधिकारी को अवरोधक सेना के विषय में सूचना लाने के लिये भेजा। गेसू ने आकर बताया दूसरे दिन प्रातःकाल आक्रमण होगा दुर्ग नमाज पढ़ने के आसन की भॉति समतल कर दिया जायेगा।[28] गेसूमल से यह जानकर कि रामचन्द्र तथा प्रताप रूद्रदेव जैसे शासकों ने उसके आगे समर्पण कर दिया है, उसने राय से संधि की प्रार्थना की।[29] राय ने यह देखकर बालक देव नामक दूत को नाना प्रकार के छल सिखाकर शाही शिविर की ओर भेजा। उसने शाही शिविर के सामने पहुॅचकर बल्लालदेव के प्राणों की रक्षा की प्रार्थना की। मलिक नायब ने उसकी प्रार्थना सुनकर कहा कि खलीपा ने बिल्लाल तथा अन्यरायों के विषय में यह आदेश दिया है कि या तो कलमा पढ़ ले या जिम्मी बनना स्वीकार करें। यदि वे दोनों बातें रद्द कर दे तों फिर उनकी गर्दनों को उनके सिर के भार से मुक्त कर दिया जाये।[30] बल्लालदेव ने दूसरा पर्याय स्वीकार किया और वार्षिक कर भेजने का वायदा किया। विशाल कोष जिसे तहखाने से निकालने में पूरा एक दिन लग गया और अनेक विशाल हाथी शाही सेनानायक के सम्मुख प्रस्तुत किये गये। वीर बल्लाल ने स्वयं मलिक काफूर के पास आकर अपनी आज्ञाकारिता प्रकट की।[31]

संधि की शर्ते तय हो जाने के पश्चात् मलिक नायब द्वारसमुद्र एक सप्ताह तक ठहरा। तदुपरान्त उसने बल्लाल देव से माबर का मार्ग जिससे शाही सेनानायक पूर्णतः अनभिज्ञ था बताने के लिये कहा। पराजित होयसल राजा के पास विजयी सेनानायक का कथन मानने के अतिरिक्त कोई चारा न था और वह एक साथी राज्य के विनाश हेतु मलिक काफूर का मार्गदर्शन करने के लिये राजी हो गया।[32]

माबर अभियान–

बुद्धवार 18 शव्वाल (10 मार्च 1311 ई0) को शाही सेना ने माबर की ओर प्रस्थान किया। पॉच दिन की कठिन यात्रा के उपरान्त शाही सेना माबर की सीमा पर पहुॅची[33] तो सेना को एक ऊॅचा पहाड़ दिखायी दिया जो उस प्रदेश की रक्षा कर रहा था।[34] प्रत्येक रात्रि को सैनिक ऐसी भूमि पर सोते थे जो ऊॅट की पीठ से भी अधिक ऊॅची–नीची थी। इसामी के अनुसार बहराम करा, तकलानिंहग, महमूद सरनीहा और आबाजी मुगल जैसे उच्चाधिकारियों के अन्तर्गत एक निरीक्षक दल शाही सेना के साथ था। प्रतिदिन इन नायाकों में से एक व्यक्ति उस प्रदेश कीभाषा जानने वाले कुछ व्यक्तियों के साथ आगे चला जाता था और शत्रु के प्रदेश की स्थिति के संबंध में शाही सेनानायक के पास समाचार लाता था।[35] आबाजी मुगल ने सोचा मैं माबर के राय के पास चला जाऊॅ तुर्की की सेना के समाचार उस तक पहॅुचा दूॅ ताकि वे रात्रि में आक्रमण करके उसकी (काफूर) की हत्या कर दें। यह निश्चय करके वह शाही सेना से आगे चला तभी हिन्दुओं की सेना के एक दल ने उस पर आक्रमण कर दिया। आबाजी मुगल की सेना परास्त हुयी। तीसरे दिन आबाजी शाही सेना में पहॅुचा, जब मलिक नायब को यह ज्ञात हुआ तो आबाजी मुगल को बंदी बना लिया गया।[36] सेना ने आगे बढ़ते हुये तिलमली तथा ताबरू नामक दो दर्रों को पार किया और शाही सेना ने मर्दी नामक नगर तथा किले पर अधिकार जमा लिया इस किले के लिये भीषण रक्तपात हुआ, किन्तु शाही–सेना ने भूमि विद्रोहियों के रक्त से धो डाली।[37]तत्पश्चात् सेना कनौरी नदी से बीरधूल को रवाना हुयी।[38] वीर पाण्ड्या कन्दूर (जो आज का कन्नानूर माना गया) की ओर भाग गया किन्तु उसने स्वयं को सुरक्षित अनुभव नहीं किया और वहॉ से भी वह चीतों और हाथियों के जंगलों की ओर भाग गया।जहॉ भी वीर पाण्ड्या गया मलिक काफूर लगातार उसका पीछा करता रहा। लगभग 20 हजार मुसलमान जो कालांतर से दक्षिण भारत में बस गये थे और हिन्दुओं की ओर से लड़ रहे थे, शाही पक्ष की ओर चले गये और उनके प्राण बच गये।[39]

जब सेना ने पीछा करते हुये बीर चोला में प्रवेश किया तो अन्तर्देश बाढ़ से जलमगन हो रहा था। यहॉ तक कि कूये और सड़क में भेद करना सम्भव नहीं था।[40] शाही सेना उस मार्ग को पार करती हुयी एक गॉव में पहॅुची तो हिन्दू सेना पानी के बुलबुले के समान गायब हो गयी। आधी रात के समय यह पता चला कि वीर पाण्ड्या कन्दूर की ओर भाग गया है। शाही सेना ने उसका पीछा किया और शीघ्र ही उस नगर में पहॅुच गयी। वीर पाण्ड्या वहॉ से भी भाग निकल गया, शाही सेना को 120 हाथी हाथ लगे। उन हाथियों की पीठ पर अपार धन सम्पत्ति थी, वह सब धन सम्पत्ति शाही खजाने के अधिकारियों को दे दी गयी।[41] मलिक काफूर का वास्तविक उद्देश्य अपने मित्र सुन्दर पाण्ड्या को सहायता देने की अपेक्षा अपने शत्रु वीर पाण्ड्या का विनाश करना था। उसने कन्दूर की जनता का संहार कर डाला किन्तु यह निरर्थक रहा, क्योंकि वीर वह स्थान पहले ही त्याग चुका था।[42] यह सूचना मिली कि वीर पाण्ड्या जलकूटा की ओर भाग गया है।[43]

मलिक नायब उस दिशा की ओर चला किन्तु कंटकाकीर्ण वनों के कारण आगे जाना असम्भव हो गया। वह पुनः कन्दूर लौट आया। जहॉ उसने और अधिक हाथियों और कोष की खोजबीन की। इसी समय उसने कन्दूर के आस–पास स्थित स्थानों के मन्दिरों और कोषगारों के संबंध में सूचना एकत्र कर ली थी।[44] ऐसी सूचना मिली कि बर्गतपुरी (ब्रह्मस्तपुरी या चिदम्बरम) नगर में एक सुनहरा मंदिर है जहॉ वीर के समस्त हाथी जमा हैं, सेना तूफान के समान चल पड़ी। आधी रात्रि में में वहॉ पहॅुच गयी 250 हाथी सुबह होते ही पकड़ लिये गये।[45] तदुपरान्त काफूर स्वर्ण मंदिर की ओर मुड़ा जिसकी भीतरी छतों और दीवारों में माणिक्य और हीरे जड़े थे। विध्वंस और लूट पूर्णरूपेण की गयी।[46] पत्थर की मूर्तियॉ जो महादेव लिंग कहलाती थी और प्राचीन समय से वहॉ विद्यमान थी, तहस–नहस कर दी गयीं। देवनारायण तथा अन्य मूर्तियों का भी विनाश कर दिया गया। वहॉ की समस्त धन–सम्पत्ति तथा सोना, जवाहरात शाही सेना ने प्राप्त कर लिया।[47] श्री रंगम का मंदिर भी नष्ट किया गया। क्योंकि कन्नानूर के पास के सारे मंदिरों पर आक्रमण किया गया था।[48] बीर धूल के मंदिर भी ब्रह्मस्तपुरी से आयी सेना द्वारा पूर्णतः नष्ट हुये क्योंकि राजा को न पाकर असंतुष्ट और क्रोधित हो उन्होंने मदिंर तथा भवन नष्ट किये और निर्दयतापूर्वक लोगों का संहार किया।[49]

शाही सेना वीर पाण्ड्य का पीछा करती हुयी आगे बढ़ी। बृहस्पतिवार अप्रैल 1311 को किम् (कुम या इलियट–खम, कानम) नगर पहॅुची,[50] पॉच दिन पश्चात्सेना मदुरा पहुची, जहॉ ऐसा अनुमान था कि वीर पाण्ड्य

है राय अपने परिवार और कोष के साथ पुनः वहाँ से भाग गया।[51] केवल दो या तीन हाथी जगन्नाथ के मंदिर में शेष रह गये थे। मलिक काफूर ने क्रोध में आकर जगन्नाथ मंदिर में आग लगा दी।[52] ठीक इसी समय सुंदर पाण्ड्य के चाचा विक्रम पाण्ड्या ने उस पर आक्रमण कर उसे पराजित कर दिया किसी तरह मलिक काफूर लूट की सम्पत्ति को बचा सका, 25 अप्रैल 1311 को उसने अपना शिविर परिवर्तित किया।[53] इस समय तक उसका धैर्य समाप्त हो गया था उसने सप्ताहों और महीनों तक शहरों में, जंगलों में और पहाड़ियों में लगातार राय की खोज की थी किन्तु सर्वत्र असफलता ही हाथ लगी। यह देखकर कि वह इतनी सम्पत्ति का स्वामी हो गया है, और इतने हाथी अधिकृत किये हैं उसने (काफूर) निरर्थक पीछा त्यागकर घर लौटने का निश्चय किया। लौटने से पूर्व उसने लूट की सामग्री को व्यवस्थित और वर्गीकृत किये जाने का आदेश दिया।

लूट में उसे 512 हाथी (बरनी के अनुसार 612), 5000 अरबी, यमनी और सीरियाई नस्लों के घोड़े।[54] (बरनी के अनुसार 20,000 घोड़े, 96,000 मन सोना) और विभिन्न प्रकार के जवाहरात प्राप्त किये।[55] खुसरो के अनुसार 500 मन बहुमूल्य रत्न प्राप्त हुये थे।[56]

रविवार की रात्रि में शाही सेना ने वापिसी की तैयारी प्रारम्भ कर दी। प्रातः रविवार 25 अप्रैल 1311 (4 जिलहिज्जा 710 हिजरी) को सेना का बहुत बड़ा भाग तथा हाथी एवंम् देहली की ओर भेज दिये गये और वह शीघ् ही उबड़–खाबड़ तथा कठिन मार्गों को तय करते हुये लगभग 6 माह में राजधानी पहुँचे[57]।

अन्ततः सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने सेनापति और उसके सैनिकों का भव्य स्वागत किया उसने सोमवार 18 अक्टूबर 1311 (4 जमादुस सानी 711 हि0) को सीरी के हजार सितून महल में एक दरबार का आयोजन किया।[58] वहाँ मलिक काफूर ने सुल्तान के समक्ष दक्षिण का धन प्रस्तुत किया। बरनी कहता है कि दक्षिण में प्राप्त सम्पत्ति इतनी थी कि मुसलमानों द्वारा दिल्ली अधिकृत किये जाने पर भी इतना कोष अधिकृत नहीं किया गया। इन महान अवसरों पर अलाउद्दीन अपनी उदारता का (परिचय) प्रदर्शन करने से नहीं चूकता था। उसने अपने अमीरों का क्रमश : 4, 2, 1 और आध मन सोना दिया।[59] होयसल राजा बीर बल्लाल देव काफूर के माबर अभियान के समय काफूर का साथ देने और माबर के त्वरित विनाश में सहायता देने के पश्चात काफूर के साथ देहली आया था। सुल्तान, बल्लाल की सहायता और स्वामीभक्ति से बहुत प्रसन्न हुआ उसने उसे एक विशेष खिलयत एक मुकुट और एक छत्र दिया और दस लाख टंका की थैली भी भेंट स्वरूप दी। होयसल राजा कुछ समय तक दिल्ली ठहरा और सुल्तान ने जब उसका राज्य वापिस कर दिया तो वह द्वार समुद्र लौट आया। वास्तव में यह एक आचर्श्य की बात है मलिक नायब काफूर के लिये किये गये विशेष स्वागत समारोह का वर्णन करते अमीर खुसरो और बरनी बल्लालदेव का वर्णन नहीं करते जो वहाँ का महत्वपूर्ण व्यक्ति रहा होगा, किन्तु इसामी लिखता है कि किस प्रकार अलाउद्दीन ने बीर बल्लाल का स्वागत किया।[60]सुल्तान ने विद्रोही आवाजी मुगल के विषय में आदेश दिया कि उसको मृत्यु दण्ड दिया जाये। सुल्तान ने मलिक नायब को एक खास खिलयत प्रदान की[61] और उसे अपना और विशेष कृपापात्र एवम विश्वासी बना लिया।

सन्दर्भ–

1. हबीब द्वारा किये खजायन–उल–फुतूहु के अनुवाद में 26 जमादुल आखीर है, इलियट की इलाहाबाद विश्वविद्यालय की पाण्डुलिपि में 24 है। बरनी केवल 710 हि0 के अंत तक कहता है।
2. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 124।
3. यह ग्राम अब नक्शों में नहीं मिलता, बरनी वही मार्ग बताता है जो पिछले अवसर पर चुना गया था और कहता है कि मलिक नायब पहले रेवारी की ओर गया फिर सीधा देवगिरी को गया।
4. खजायन–उल–फुतूहु, अनु0 सै0अ0अ0 रिजवी, पृ0 165।
5. कैथुन या कन्हूर को प्रो0 आयंगर राजपूताना में उज्जैन से दिल्ली जाने वाले मार्ग के थोड़े किनारे पर स्थित कन्हून के रूप में पहचानते हैं।
6. इनवेडर्स, पृ0 101।
7. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 191।
8. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवंम खलिक अहमद निजामी, पृ0 343।
9. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 192।

10. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 130–133।
11. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवंम खलिक अहमद निजामी, पृ0 343।
12. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 192।
13. बरनी,पृ0333।
14. फुतूहु–उस–सलातीन, इसामी, पृ0316।
15. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 192।
16. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 133।
17. इलाहाबाद विश्वविद्यालय पाण्डु, प0 61।
18. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी, पृ0 344।
19. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 192।
20. आयंगर उपरोल्लिखित ग्रंथ, पृ0 97।
21. वस्सफा, पृ0 531।
22. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 138।
23. आयंगर (उपरोल्लिखित ग्रन्थ, पृ0 102) पण्ढरपुर को बन्द्री मानते हैं और आगे कहते हैं कि ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय यादव तथा होयसल राज्यों के मध्य सीमा की चौंकी रहा होगा।
24. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी, पृ0 344।
25. खजायन–उल–फुतूहु, अनु0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी, पृ0 344।
26. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी, पृ0 344।
27. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 139–142।
28. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी, पृ0 344।
29. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 193।
30. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 145–46–47।
31. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 194, बरनी कहता है कि मलिक काफूर ने 36 हाथी और द्वार समुद्र का सारा कोष अधिकृत कर लिया।
32. फुतूहु–उस–सलातीन, इसामी, पृ0 287।
33. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 156, पाण्डय देश को मुसलमान माबर कहते हैं। यह किलोन से नैलोर तक समुद्र के किनारे–किनारे लगभग 300 फरसांग लम्बा था।
34. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी, पृ0 345।
35. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 195।
36. फुतूहु–उस–सलातीन, ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक इसामी, पृ0 296।
37. खजायन–उल–फुतूहु, अनु0–सै0अ0अ0 रिजवी, पृ0 168, माबर की विजय के पश्चात जब काफूर दिल्ली लौटा तो सुल्तान की आज्ञा से आबाजी मुगल का सर धड़ से अलग कर दिया गया।
38. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 156, प्रो0 आयंगर का विचार है कि यह वीर (बीर) पाण्डय का मुख्यालय था। तकवीमुल बुलदान में अबुल फेदा भी बीर दावल को माबर देश की राजधानी कहता है।
39. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 196।
40. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी, पृ0 346।
41. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 163–164।
42. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 196।
43. इलाहाबाद विश्वविद्यालय पाण्डलिपि में जलकोटा लिखा है। प्रा0 आयंगर का सुझाव है कि इसका अर्थ जल दुर्ग है यह गहरे पानी से घिरा हुआ एक द्वीप हो सकता है, इनवेडर्स, पृ0 111।
44. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 196।
45. खजायन–उल–फुतूहु, अनु0–सै0अ0अ0 रिजवी, पृ0 168–169।
46. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी, पृ0 346।

LBP PUBLICATION

47. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 172।
48. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 197।
49. देवलरानी, पृ0 70–73, देवलरानी में खुसरो माबर के अनेक मदिंरों के विनाश की चर्चा करता है।
50. खजायन–उल–फुतूहु, अनु0–सै0अ0अ0 रिजवी, पृ0 169।
51. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 198।
52. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 174।
53. मध्यकालीन भारत का इतिहास, मोतीलाल भार्गव, पृ0 118।
54. खजायन–उल–फुतूहु, अनु0– हबीब, पृ0 106।
55. वही, पृ0 105–107।
56. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 178।
57. खजायन–उल–फुतूहु, अनु0–सै0अ0अ0 रिजवी, पृ0 169।
58. खजायन–उल–फुतूहु, अनु0, पृ0–180, तारीख–ए–फिरोजशाही, अनु0सै0अ0अ0 रिजवी, पृ0 96।
59. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 199।
60. फुतूहु–उस–सलातीन, इसामी, पृ0 290।
61. वही, पृ0 298।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. तरीख–ए–फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, अनु0 अतहर अब्बास–रिजवी।
2. देवलरानी–खिज्रखाँ : ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक इसामी, अनु0–मौ0 मेंहदी हुसेन।
3. फुतूहु–उस–सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक इसामी, अनु0–मौ0 मेंहदी हुसेन।
4. तारीख–ए–मुबारकशाही : याहिया सर हिन्दी, अनु0–के0के0 बसु।
5. खजायन–उल–फुतूह : अमीर खुसरो अनु0 सै0अतहर अब्बास रिजवी।
6. काम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डियाः सर बुल्जले हेग, तृतीय खण्ड़ 1928।
7. नोबिलिटी अण्डर दी सुल्तानस :एस0वी0पी0 निगम।
8. हिस्ट्री आफ पर्शिया : साइक्स दितीय।
9. दिल्ली सल्तनत : मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी।
10. भारतीय इतिहास का मुस्लिम युग:एस0एल0सीकरी।
11. भारत में मुस्लिम शासक का इतिहास :एस0आर0शर्मा।
12. खिलजी वंश का इतिहास :के0एस0लाल।
13. पूर्व मध्यकालीन भारत : अवध बिहारी पाण्डेय।
14. मध्यकालीन भारत का इतिहास : मोती लाल भार्गव।
15. साउथ इण्डियन एण्ड हर मोहमडन इनवेडर्स : के0एस0 आयंगर।
16. अर्ली हिस्ट्री ऑफ डेकिन : आर0जी0 भण्डारकर।
17. मुस्लिम स्टेट इन इण्डिया : के0एस0 लाल।
18. इलाहबाद विश्विद्यलय पाण्डुलिपि ।

डॉः नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज आफ ऐजूकेशन , गुरूहरसहाय, फिरोजपुर (पंजाब)।